भगवत कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 26 अंक : 6 | 15.11.2003 शनिवार (नवंबर - दिसंबर) | वार्षिक चंदा : 50.00

अन्नकूट कृपाप्रसाद....

हर साल की तरह इस बार भी हमारे मंदिर में ठाकुरजी व गुणातीत स्वरूपों के समक्ष अन्नकूट में भक्तों की भक्ति-भावना के प्रतीक रूप पूरे वर्ष दरम्यान खाए जाने वाले करीब 500-550 व्यंजनों का भोग लगाया गया।

पुराने समय से ऐसा माना जाता है कि दीवाली के दिन घर बंद नहीं होना चाहिए। पर, प्रगट के भक्तों की दीवाली तो निराली ! अमदावाद, मुंबई, वडोदरा, पंजाब से दीवाली के दिन अपना घर बंद करके मानो अपने बड़े घर में दीवाली मनाने भक्त दिल्ली पहुँच गए थे। उनकी भावना इस प्रकार थी कि जीवन में सच्ची दीवाली-सच्चा प्रकाश तो केवल प्रभुधारक संत ही प्रगटा सकते हैं—जीवन का सच्चा धन ऐसे संत हैं। ऐसे संत का दृढ़ आसरा रखेंगे, तो कीर्ति, यश, लक्ष्मी व हर क्षेत्र में विजय अपने आप पीछे-पीछे आएंगे....

दीवाली के दिनों में जगत में लड़के-लड़कियाँ मौज-मस्ती, कई शौक, घूमना-फिरना आदि में आनंद करते हैं। पर, यहां मंदिर में सभी भक्तों के बच्चे-लड़कियाँ करीब पन्द्रह-बीस दिन से दिन-रात सेवा में लगे थे। भाभियों-बहनों ने दीवाली के दिन सुबह से लेकर शाम तक मंदिर में अन्नकूटोत्सव की सब्जियाँ काटने की सेवा करी और... फिर रात को घर जाकर स्वयं को सौंपे अन्नकूट के व्यंजन बना कर तड़के वे मंदिर भेज दिए।

26 अक्तुबर की सुबह से तो स्थानीय भक्तों के आने का तांता लगने लगा। भक्तों को राजी करके प्रभु की मूर्ति लूटने का एक भी मौका प.पू. गुरुजी कभी चूकते नहीं हैं। अब की बार पिछले 20-22 साल में हुए अन्नकूटोत्सवों की झांकियों के दर्शन कराने प.पू. गुरुजी ने तब के कई फोटो एन्लार्ज करवा के छोटी-सी चित्र प्रदर्शनी के रूप में लगवाए थे। **'मेमोरी गोल्ड'** के रूप में मानो लौट आया गुज़रा ज़माना ! पुराने जोगियों की चित्तपट्टी पर पुरानी स्मृतियाँ एकदम ताजी हो गईं और प.पू. गुरुजी की इस निराली सोच के प्रति दिल श्रद्धा से नतमस्तक हो गया !

हर साल की तरह साढ़े ग्यारह बजे थाल लगाने के बाद अन्नकूट आरती हुई... पूरे दिन प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सभी ने दिव्यता की अलग ही अनुभूति की और सायं अन्नकूट के बर्तन इत्यादि साफ करके, आनंद करके रात नौ बजे के करीब अपने-अपने घर प्रयाण किया। आइए, नए वर्ष में प.पू. गुरुजी के वाणी रूपी महाप्रसाद को प्राप्त करें....

....ये **'अन्नकूट'** हमारा एक गेट टु गेधर है। आपने लिफाफे पर पढ़ा होगा—**'एन्युअल गेट टु गेधर ऑफ धी होली फेमिली !'** ये अपना एक सारा दिव्य परिवार है और फेलोशिप के अंदर पारिवारिक रूप में जीना—वो ही सत्संग है। गुणातीतानंदस्वामी ने यह जिक्र किया था। इन्होंने कहा—**'भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि यही सत्संग है।'** सारी रात भजन करो, कीर्तन करो, तप करो, व्रत करो, मंदिरों में जाओ, तीर्थाटन करो, जगराते में जाओ, ऐसी कोई बात को सत्संग की व्याख्या—डेफिनेशन नहीं बताई। भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि यानि जैसी भावना हमारे परिवार के सदस्य में हमारी रहती है— वो आत्मबुद्धि !

मुझे याद है सालों पहले सुरत में या अमदावाद में स्वामिजी की जयंती मनाई जा रही थी। उस समय करीब पंद्रह-बीस हज़ार का गेधरींग था। तो **काकाजी** ने एकदम कहा कि **समाज खूब बढ़ गया, लेकिन सत्संग बढ़ा ?** बहुत गहराई की बात है यह। समाज खूब बढ़ गया लेकिन उन्होंने क्वेश्चन करा कि सत्संग बढ़ा ? इसी तरह गुणातीतानंदस्वामी की एक बात में है– 'वो सत्संग में रहा लेकिन उसे सत्संग छू नहीं पाया...।' ये कोई कॉन्ट्रोवर्शियल स्टेटमेन्ट है। तो, स्वामी या काकाजी या ऐसे बड़े संत जो 'सत्संग' समझाना चाहते हैं, वो कोई अलग चीज़ है। इसी बात को काकाजी ने और ढंग से भी कही थी कि टोकरे के अंदर आम भरे होते हैं– इकट्ठे होते हैं। हम बोलेंगे कि सब आम एक हैं, लेकिन वो एक नहीं हैं। जबकि एक ही पेड़ की अलग-अलग डालियों पर आम अलग-अलग होंगे, लेकिन वो एक हैं। महाराज के टाईम से लेकर जो गुणातीत पुरुषों ने परिश्रम किया हुआ है, वो ऐसे सत्संग का किया हुआ है...

भरतभाई का काग़ज़ और कल की ये हिम्मतभाई की बात– मेरे दिमाग में से हटती ही नहीं है। काकाजी की बातें हम भी सुनते थे... एक बार पत्रिका के सद्विचार में भी लिखवाया था– **'दीवाळी आवी ने गई !'** पर, भरतभाई ने बताया–इस तरह **ये नया साल आया और चला जाएगा– ऐसा न हो।** हमें **आत्मबुद्धि और प्रीति की दिशा में जाना है, वह चूक न जाएं !** जैसे में कई बार कह चुका हूँ कि हमारी भारतीय संस्कृति ही ऐसी है कि मंदिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारा, गिरजाघर, संतों, फकीरों, पादरियों, धर्मगुरुओं, गुरु ग्रंथ साहेब या ग्रंथियों–इन सब के प्रति हमें खूब पूज्यभाव रहेगा। लेकिन भागवत में बताया कि **मोक्ष का द्वार तभी खुलता है, जब ऐसे भक्तों के अंदर-ऐसे प्रभु के संबंध वाले मुक्तों में आत्मबुद्धि और प्रीति से अपनेपन से जुड़ जाएंगे...** तो ये भरतभाई की बात को खूब विचारें कि इतने साल तो हमारे सच में ऐसे ही गए कि **'दीवाली आई और गई ! दीवाली आई और गई !'** ऐसा अब न हो, हमारा हर पल दीवालीमय ही रहे, प्रकाशमय, ज्योतिर्मय बने।

तरक्की भी हो रही है, भले हमें ख्याल में नहीं आती है। कल ये हिम्मतभाई ने बात करी तो मैं इतना खुश हो गया कि ओहो काकाजी ने धीरे-धीरे कैसा काम करा है ! आप जानते हो कि मंदिर में तीन दिन से चॉकलेट का प्रसाद बंटता हैं ! बेशक, मैं भी समझता हूँ कि बच्चे-यंगस्टर्स खुश होकर चॉकलेट का प्रसाद ले जाएंगे। लेकिन जो कन्वेन्शनल प्रसाद के आदती बने हुए हैं या जिनके अपने कई इज़म्स हैं, नोशन्स हैं कि भई मंदिर में मूंगफली दो, मिश्री दो, गुड़ दो, पेड़ा दो, बर्फी दो, ड्राईफ्रूट दो। पर, चॉकलेट का प्रसाद ! लेकिन यहां किसी सेवक ने खूब अपनेपन से बांटने के लिए चॉकलेट भेजी थी, तो मैंने सोचा–भगवान को भोग लगा कर हर एक को बांटो। यूं मैंने हिम्मतभाई आए, इनको भी चॉकलेट दी और ही इज़ एजिंग मोर धेन सेवनटी फोर ! लेकिन वो इतनी नॅचरल वे में बोले कि अब गुरुजी ने हमें 'भुलका' मान लिया-चॉकलेट दी ! छोटे बच्चे को चॉकलेट दी जाती है। आज पिचत्तर साल की उम्र पर मुझे भी अगर चॉकलेट देते हैं, मतलब गुरुजी ने रिकगनाईज़ कर दिया कि हम 'भुलके' बालक हैं। संतों के प्रति ऐसा निर्दोषभाव–दिव्यभाव, ये अपनेपन के बिना आ नहीं सकता। वर्ना तो कहते कि कमाल है यह मंदिर तो ! केडबरी चॉकलेट कोई प्रसाद में देने की चीज़ है ? इन्स्टेन्ट–स्पोन्टेनियसली ये माईन्ड में आना–वो प्रभु की बहुत बड़ी ग्रेस होती है, बहुत बड़ी कृपा होती है तभी होता है। ऐसा निर्दोषभाव–ऐसा अपनापन ये सारे समाज में दिखता है। ये वीनू अंकल काकाजी के भतीजे हैं। वे बड़े खुश हैं कि यहां सत्संग में जो अपनापन नज़र आता है, इससे आई एम एस्टोनिश्ड कि क्या काकाजी ने यहां काम करा हुआ है ! ये एक तरक्की हुई है कि मनुष्यभाव कहो या आम नज़र से देखना कहो, इसके बजाय एक दिव्यभाव प्रगटा है हम लोगों में।

... आज से दो सौ साल पहले की बात है। इसे सुन कर ख्याल पड़ेगा कि यह सत्संग कैसा है ! आचार्य महाराज के साथ–गुणातीतानंदस्वामी घोड़ागाड़ी में जूनागढ़ जा रहे थे। जूनागढ़ के करीब थोड़े डिस्टन्स पर होंगे और वो गाड़ी का एक्सल टूट गया। सामने दूर कोई गाँव नज़र आता था, तो स्वामी ने साथ में रहे सेवक को कहा कि तुम सामने जाओ और बोलो कि जूनागढ़ के स्वामी हैं और यहां ऐसे गाड़ी टूट गई है। तो बैलगाड़ा भेजें जिसमें हम चले जाएं। सेवक ने कुछ अपना दिमाग ज्यादा लगा कर सोचा कि मैं आचार्य महाराज का नाम दे दूँगा, तो भगत लोग तुरंत बैलगाड़ा भेज देंगे। आप सब समझते हो कि संतों की महिमा है, लेकिन सांप्रदायिक तौर पर आचार्य महाराज का स्टेटस हमेशा ऊँचा रहा हुआ है। उसने जाकर यह बात करी कि ऐसा–ऐसा है, आचार्य महाराज जा रहे हैं, साथ में संत लोग हैं और इनको जाना है। भक्तों ने बड़ी विनम्रता से कहा– देखो, सारे बैल खेत में जुते हुए हैं, अब थोड़ा ही टाईम है; शाम हो जाएगी- बैल आ जाएंगे, तुरंत हम भेज देंगे। तब तक संतों को बोलो गाँव में आकर के सब विश्राम करें। सेवक तो मेसेज लेकर वापिस आया। स्वामी को पता था कि इन भक्तों द्वारा कभी ये जवाब आ ही नहीं सकता। तो स्वामी ने पूछा कि तूने कहा था कि मैंने कहलवाया है ?

उसने कहा– स्वामी ! आपकी तो बात ही छोड़ो, मैंने आचार्य महाराज का नाम लिया था। तो, स्वामी ने कहा तू जा वापिस और बोल कि जूनागढ़ के जोगी हैं, उन्हें पहुँचना जरुरी है। फिर सेवक ने जाकर यह कहा– तो भगत लोग एकदम स्ट्रेस में आ गए कि तूने हमें कहा क्यों नहीं कि स्वामी हैं ? तू पहुँच, हम जल्दी लेकर आ जाते हैं। खेती का सारा काम छोड़ के बैल मंगा कर वो लोग आए और जहां से स्वामी नज़र आते वहां से माफी के लिए दंडवत् करना शुरु करा। स्वामी को कहा– स्वामी माफ करो, हमें पता ही नहीं था और अब ये बैल आप मंदिर में ही रखना। जो बैल आपको गाड़ी में बिठा कर खींच करके ले गए, वो हम हमारी खेती के काम में अब ले नहीं सकते। वो प्रसादी के हो गए, आपके पास मंदिर में ही रखना ! **आचार्य महाराज** तो देखते ही रहे, लेकिन वे **दैवी अंश थे।** वर्ना तो हो जाए कि स्टेटस मेरा ऊँचा और चले इनकी ज्यादा ? आजकल खींचातानी यही चलती रहती है। आचार्य महाराज खुश हो गए और पूछा कि स्वामी ! सोरठ में ऐसे कितने तैयार करे हैं ? स्वामी ने कहा कि ये कूंकावाव ऐसे भक्तों के सिर से भर जाए, इतने हैं। **ये साधु की एसेट है।** ऐसा सत्संग काकाजी ने हमेशा हर जगह चाहा हुआ है। ये कोई नई बात भी नहीं है। महाराज ने वचनामृत में कहा हुआ है कि ऐसे सत्संगी वैष्णव यही हमारी नात है, यही हमारी जात है, यही हमारा परिवार है, यही हमारी बिरादरी है। ऐसा सत्संग हो, इसके लिए ये कार्ड में जो बात लिखी वो समझनी जरुरी है...

...ये कार्ड पर जो पिक्चर है उसका पोस्टर मैंने प्रार्थना के साथ काकाजी को भेजा था। ऐसे स्वरूपों को हम बड़े मानते हैं, इनके सेवक होने का दावा भी करते हैं। लेकिन बालक जैसे निर्दोषभाव से हम नहीं रहते... अपनी कॉन्सशियसनेस नहीं छोड़ सकते। जैसे मैं अर्जुन और कर्ण की लड़ाई का एग्ज़ाम्पल कई बार बताता हूँ। अर्जुन वैसे तो मानता ही था और तब ही कहा कि प्रभु मुझे आपकी सेना नहीं चाहिए, मुझे तो आप साथ में चाहिए। वो मानता था कि कृष्ण के कारण ही मेरी जीत हो सकती है। लेकिन जब कर्ण के साथ का मुकाबला हुआ, वहां एक बरोबरी का भाव कहो या कर्ण का वो रथ काफी पीछे चला गया तो उसकी कॉन्सशियसनेस में वो झूलने लगा। लेकिन प्रभु कितने दयालु हैं कि उसको पूछा कि क्यों मुस्काया ? तब जब अर्जुन ने कहा कि इसका कितना हट गया और मेरा ? भगवान ने बताया कि सारी त्रिलोकी का बोझ रखा है और ऊपर से भी हनुमान बैठे हुए हैं, तब भी तेरा रथ इतना फटक गया। अगर यह नहीं होता तो कर्ण तुझे कहीं फेंक देता। तब वो समझा।

इसी तरह हम मानते जरुर हैं, लेकिन ऐन मौके पर कुछ इज़म कहो, वृत्ति कहो, अहम् कहो, अपनी वॉन्ट्स कहो वो ऐसे संतों के पास खड़ी हो जाती है। गीता में भी एक तरफ से तो अर्जुन ने कहा कि हे प्रभु मैं आपका सेवक हूँ, अब आप मुझे कहो कि मुझे क्या करना है, लेकिन मैं लड़ाई नहीं करुंगा। फिर क्या कहना है भगवान को ? जब वह कह ही देता है कि मैं लड़ाई नहीं करुंगा। हम हँसते हैं– अर्जुन के ऊपर, ये बात के ऊपर; लेकिन हम भी तो ऐसा ही करते हैं। वहां भगवान हँसते हैं कि ये कैसा सेवक जो मुझे पूछता है कि मुझे क्या करना है और साथ में कहता है कि मैं ये नहीं करुंगा। फिर भी प्रभु ने उपदेश देकर कितना समझाया और जब उसने कहा कि– 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा'– अब आप जो कहोगे वही करुंगा, तब जाकर भगवान ने उसे छोड़ा और अर्जुन को आखिर नारायण स्वरूप बनाया। मॉरालिटी में, सदाचार में–सब तरीके से युधिष्ठर बहुत बड़े, लेकिन आज हर एक मंदिर में उसकी मूर्ति नहीं है, जबकि अर्जुन की मूर्ति नर-नारायण के स्वरूप में है।

तो ये एक **रहस्य** को हम समझें कि **जैसा संबंध अर्जुन का श्री कृष्ण के साथ था, हनुमान का श्री राम के साथ था, शिवाजी का रामदासजी के साथ था– ऐसा संबंध ऐसे परम पवित्र पुरुष के साथ कर लें।** इनके पास ऐसी सरलता रखें, इनका ही आधार रखें और वो काकाजी ने बताया कि– 'बालक' बन कर रखें। बालक को कुछ भी होगा इमीज्येटली 'मम्मी-मम्मी-मम्मी' करने लग जाएगा। **माँ की ही अपेक्षा और माँ का ही आधार ! हम प्रभु का आधार लेते हैं; नहीं लेते हैं ऐसा नहीं है। लेकिन जब अपने सारे आधार टूट जाएंगे तब !** जैसे द्रोपदी सब के पास चली गई– धृतराष्ट्र के पास, भीष्म के पास, सब के पास और जब लगा कि अब कुछ नहीं होना है, तब भी दाँत में साड़ी का पल्लू पकड़े रखा और वो छूट गया तब बोली– 'हे कृष्ण' ! और तब प्रभु तो तुरंत तैयार ही थे।

सो हम एक रेग्युलर प्रेक्टीस ही बना दें कि सुबह और शाम बीस-बीस मिनिट स्वामिनारायण-स्वामिनारायण.... मंत्र ! अपनी फिलोसोफी जीवंत है। दूसरी जगह एक मंत्र का फल एक... 'स्वामिनारायण' मंत्र भी एक मंत्र का फल एक ही है। लेकिन **वो ही मंत्र ऐसे संत के वचन से–ऐसे संत की स्मृति के साथ रटेंगे उसका फल कई गुना होता है। यह एक टेक्नीक है-रहस्य है या कहो स्पीच्युअलीटी में टेक्नीकल एडवान्समेन्ट हुई है !** जैसे कि मैं अब माईक के सामने बोलता हूँ तो आप सुन पाते हो, बाकी बोलता तो इतनी ही आवाज़ से हूँ। यह माईक नहीं होगा तो ज्यादा नहीं सुनाई पड़ेगा। **यह सामने होने के कारण इसका पॉवर बढ़ गया ! इसी तरह ऐसे संत–जिसने प्रभु को प्रगटाया हुआ हो, उसकी स्मृति से**

स्वामिनारायण या तुम्हारे जो भी इष्टदेव हो; उसकी स्मृति के साथ-उसके वचन से भजन करेंगे तो एक मंत्र का फल करोड़ गुणा ! काकाजी तो कहते थे कि **आप किसी को भी मानो, लेकिन उसको टोटल मानो, पार्शियल नहीं मानो, कंडीशनल नहीं मानो और वो तुम्हारे प्रभु मानवस्वरूप में प्रगट होने चाहिए, जैसे अर्जुन के कृष्ण थे।**

तो ये रास्ते पर हम सब चलें। काकाजी हम सब को इसी लेईन में बनाएं रखें। हम इधर-उधर होने की कोशिश भी करें, लेकिन वो हमें होने न दें—यही इस नए साल की प्रार्थना ! सहजानंद स्वामी महाराज की जय !

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीर्वचन)

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

✱ 'तुम अपने सब पाप मुझे दे दो'—यह बात या तो कोई पागल आदमी बोलेगा या सच में प्रभु का स्वरूप ! हम सब अपनी वैदिक संस्कृति—शेरों की संस्कृति भूल गए हैं ! वैदिक संस्कृति शेरों की संस्कृति है। कुछ भी हो—प्रभु को याद करें। कुछ अच्छा हो तब भी उसे याद करें। कुछ बुरा हो तब भी उसे ही याद करें। दूसरी जगह देखें ही नहीं—वो वैदिक संस्कृति है।

✱ 'सोऽहम् दासोऽहम्' यानि प्रभु के दास का दास हूं। हम बोलते हैं यह, पर वर्तते इस तरह हैं कि दास का बाप हूँ !

✱ हमें टाईम की कीमत नहीं है, क्योंकि हमें ऐसी महिमा नहीं है कि ओहो ! हमारे जीवन में प्रगट प्रभु आए और एक सैकण्ड भी गवाएं बिना उनको राजी कर लेंगे, तो बहुत बड़ी प्राप्ति हो जाएगी।

✱ सालों पहले प.पू. पप्पाजी कहते थे कि गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन से 'साधु' होने हाँ कर दो; वे एक-एक को भगवान जैसा बना देंगे। प.पू. पप्पाजी जानते थे कि बापा क्या चीज़ हैं ! उस समय हमें भी ऐसा लगता था कि हमें पटाने-फंसाने मीठी मीठी बातें करके लालच देकर अपना काम निकालने ऐसा कह रहे हैं-जो तुम्हें आज लगता है। ऐसी बात भले हमें लगती थी, पर हम इनसे जुड़े ऐसे थे कि जँचता हो—नहीं जँचता हो पर वे जो कहें वो कर लें। भले पसंद आता हो, नहीं आता हो। चाहे मन में फिट बैठता हो— नहीं बैठता हो, पर इनका कहा करना है।

उस समय इन बातों का विश्वास नहीं आता था। पर आज परम पूज्य स्वामिजी, परम पूज्य साहेब, परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी एक-एक भगवान जैसे बन गए ना ? इसलिए साधु कहता है, वो कर लें। उसमें हमारा ही हित-भलाई छिपी होती है।

✱ 'प्रगट प्रभु'— बहुत अलग ही बात है। साधु को ऐसा रहता है कि ओहो तुमने मुझे पहचाना ! बापा एक बात करते थे, जो बहुत समझने जैसी है।

एक बार काठियावाड़ में रजवाड़ों की सेमिनार हुई। उस दौरान वहां रात को भावनगर नेरश को हुक्के की तलब लगी। उसने हुक्का भर देने अपने चाकर को दो-तीन बार आवाज़ लगाई, पर चाकर शायद उस समय वहां नहीं था। तो, उसी तम्बू में सो रहे एक छोटे गांव के मुखी ने भावनगर नरेश के लिए उठ कर हुक्का भर कर दे दिया। राजा ने उसकी पहचान वगैरह पूछी। दूसरे दिन सुबह भावनगर के नरेश ने उसे अमरेली के 28 गांवों की भेंट बख़्शिश में दे दी कि ओहो रात को **तुमने मुझे पहचान कर मेरे लिए हुक्का भर दिया !** हम सोचें कि क्या हुक्का भरने की कीमत 28 गांव होते हैं ? ऐसी यह बात है।

इसी तरह यदि ऐसे संत की मर्जी में हम अपने आप को मोड़ दें, तो करोड़ों साल की साधना-तपस्या से जो नहीं हो पाए, वो मौज में बख़्शिश मिल जाएगी। **मौज का तो कोई मोल नहीं होता।** हमारे प्रारब्ध जो कि कितने ही पूजा-पाठ, जंतर-मंतर, स्टोन, पानी में बैठे रहने से या उल्टे लटकने से नहीं टलेंगे, वो इतने से टल जाएंगे। लेकिन हम दिल की सच्चाई से करते ही नहीं.... और जब-जब करा होगा, तब हमें अनुभव हुआ ही है।

हम अपनी बात को पकड़े रखने के लिए दूसरों को पोईज़न भले भरा करें कि 'कुछ नहीं होता-कुछ नहीं होता'— जबकि भीतर में हम भी समझते हैं कि हम करते नहीं, इसलिए नहीं होता। मेरी यह प्रार्थना है कि अब तो चलें और मैं भी तुम्हारे साथ हूँ ।

दुनिया झूठ पर चल रही है। वहां हम भी चलने लगते हैं, जबकि प.पू. काकाजी जैसे परम सत्य स्वरूप हमें मिले हैं।

✱ प.पू. काकाजी कहते कि—

यह सत्संग वृत्तियों के विलास-एन्टरटेनमेन्ट के लिए नहीं है। पंचविषय के रमणीय राग भोगने के लिए यह

सत्संग नहीं है। यह अगर करने जाएंगे तो हमारी हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएंगी। जैसे प्राप्ति इतनी बड़ी है, वैसे ही कोई गड़बड़ करने पर घाटा भी इतना बड़ा है।

* महर्षि अरविंद को जेल में भगवान विष्णु के दर्शन मात्र 25-30 सैकण्ड के लिए हुए... इतने में तो वे श्री अरविंद 'महायोगी' बन गए। जबकि हमें तो ऐसे प्रगट प्रभु के साथ जीवन जीने को मिला ! हमारा कैसा अहोभाग्य !

  एक ऑर्डिनरी मिनिस्टर के साथ हमारा कुछ रिलेशन होता है, तो हमारा उठना-बैठना, चलना-फिरना, रौफ-मस्ती कैसी बदल जाती है ? तो, यह तो प्रगट प्रभु के साथ जीवन जीए ! जीवन की परम धन्यता इससे अधिक और क्या ?

* हमें असली शांति चाहिए ही नहीं। बस एक भ्रांति में ही जीवन जीना है। सो, हम अब तक मिज़री में रहे हैं... सड़ते रहे हैं, पराधीन रहे हैं। अब तो इस रास्ते पर चल करके आज़ाद, स्वतंत्र, सम्मान युक्त जीवन जीएं।

* हम महाराज के समय से साथ में आते मुक्त ही हैं। पर, तब भी हमने यह बात मानी ही नहीं होगी इसलिए ऐसे सड़े हुए रहते हैं। मैं इसलिए ही कहता हूँ कि थोड़ा तो विश्वास रखें। मेरी एक ही भावना है कि प.पू. काकाजी की 'चमत्कारी' मूर्ति को पा लें ! वे हमारे जीवन में जादू करते रहेंगे। आजमाएं तो सही !

* प.पू. काकाजी कहते मुकुंदजीवन को माईन्ड है ही नहीं... सीधा चित्त है। चित्त यानि– एक फोटोग्राफिक प्लेट ! इस बात को वे इस प्रकार भी समझाते कि प्लेन पहले रनवे पर चल कर फिर ऊपर उठता है, जबकि रॉकेट को रन वे की जरुरत नहीं पड़ती; सीधा ही उठता है। पर, प.पू. काकाजी की ऐसी बातें करने पर हम सोचते कि ऐसी बड़ी-बड़ी बातें करके वे हमें प्रभावित कर देते हैं....

* भले ही कई चीज़ें हमें समझ नहीं आती, पर इतना भरोसा तो करे कि ये (गुणातीत पुरुष) हम से ज्यादा जानकार हैं। हम तो फट् ओपिनियन दे देते हैं कि यह होने वाला ही नहीं है। लेकिन हम चलते ही नहीं तो कैसे होगा ? इससे भी अधिक बड़बड़ाहट करके दूसरों के दिमाग में वो ज़हर डालने की असेवा करते हैं। कम से कम **इतना तो रखें कि ऐसी बड़बड़ाहट करके हम असेवा ना करें।**

* हम सभी महाराज के संबंध वाले पुराने हैं। पर, हमारी कसर टाल कर पूर्णाहुति कराने महाराज ने हमें भेजे होंगे। तो दूसरों की कसर पूरी करवाने की बजाय हम अपनी कसर पहले टाल लें। **अगर हम स्वयं को अक्लमंद मानते हैं तो उस अक्ल को इस तरह डायवर्ट कर लें।**

* गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. बा के प्रति मुझे मन में इतना जरुर पक्का था कि भले मुझे इनकी बात ना जँचती हो-पसंद ना आती हो, पर मुझे साधु बनाने में इन्हें कोई पर्सनल या ऐसा कोई स्वार्थ नहीं है कि चलो संस्था में एक साधु बढ़ जाएगा। ये केल्क्यूलेशन्स एकदम गलत हैं। पर कई बार हम एकदम कॉमन लेवल से भी नीचे थिंक करके नापने लगते हैं। मुझे यह जरुर था कि 'ये कोई मेरी भलाई के लिए ही कहते हैं।'

* हम इतना समझें कि मेरे माँ-बाप से कई गुणा ज्यादा मेरा हित प.पू. काकाजी करेंगे। माँ-बाप की तो एक कक्षा-केपिसिटी-लिमिटेशन्स होती है, जबकि साधु सुप्रीम। हर सत्ता उनके हाथ में है। वे मेरा हित पेरेन्ट्स से करोड़ गुणा अधिक करेंगे ! इतना भरोसा तो हम रखें।

* प्रभु के पास अपने ढंग से कुछ कराने की बजाय सिर्फ ऐसा भजन-प्रार्थना करनी चाहिए कि काकाजी आपको जो करना है, वह आप करना। मैं उसमें बाधा रूप ना बनूं।

* हमारा आज तक जो कुछ भी रुका हुआ-बिगड़ा हुआ या प्रगति नहीं होती दिखाई पड़ती उसकी वजह हम खुद ही हैं। जब भी प्रभु ने हमारी प्रगति के लिए-विकास के लिए प्रयत्न करा, हमने बीच में बाधा डाल दी। अपने मन के संकल्पों के कारण रुकावट डाल दी।

* पू. दिनकरभाई अपने प्रवचन में एक बार बोले हैं कि बड़े पुरुष के संबंध से ही हमारी रौनक-शौनक या प्रगति है; उनका संबंध यदि नहीं हो तो हम ज़ीरो हैं। यह बात दिमाग में पक्की बिठा देने जैसी है कि जो कुछ भी है, वाकई इनकी कृपा के कारण है।

  लेकिन हमें दो-चार जने मानने लग जाएं, तो हम मावजीभाई बन कर अपने आपको कुछ समझने लगते हैं। ऊपर-ऊपर से 'काकाजी-काकाजी' भले करते हैं, पर भीतर से मन में रहता है कि मैं कहूँ वैसा सब करें।

मेरा ग्रुप काकाजी से ना जुड़ जाए, बल्कि मेरे से जुड़ा रहे– यह खूब खतरनाक वृत्ति है।

❋ कभी भी 'बड़प्पन' खींचने की कोशिश ना करें। **प्रभु व संत के साथ अपना संबंध दृढ़ कर लेंगे, तो बिना कहे बड़प्पन अपने आप पीछे-पीछे आएगा।**

❋ प.पू. काकाजी के हर प्रवचन में हम सुनते कि यह सब गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज की कृपा के कारण है। उनकी हर सांस में यह बात समाई थी। इन्होंने कभी नहीं कहा कि यह सब मैंने किया, जबकि सारी लेबर तो इन्होंने करी। सिर्फ बोलने के लिए नहीं बल्कि ही एक्च्यूवली मेन्ट इट... इनको तो ऐसा ही था कि शास्त्रीजी महाराज का संकल्प मुझे नीचे नहीं गिरने देना है। यूं सेवा रूप अपना सारा जीवन होना चाहिए।

❋ हम ऊपर-ऊपर से झूठ-मूठ बनावट में कहते हैं कि काकाजी हम तुम्हारे हैं। लेकिन कई जगहों पर– ज्योतिष विद्या, सिद्धों, तीर्थ स्थानों पर विश्वास रख कर मत्थे टेकने चले जाते हैं। अगर दृढ़ निष्ठा हो तो कैसे भी संजोगों में हम और कहीं तो जाएं ही नहीं।

❋ हमें जो ज्ञान है उसके मुताबिक करेंगे तो हमारी प्रवृत्ति 'कर्मयोग' बन जाएगी। प.पू. काकाजी ने गीता की यह कितनी अच्छी बात समझाई। हम बहुत बोलेंगे पर व्यवहार में वो ज्ञान नहीं होगा, तो वो प्रवृत्ति 'कर्मयोग' नहीं बन पाएगी। इसलिए प.पू. काकाजी एक वाक्य कहते थे कि–
डू नॉट कन्सीडर धी फेक्ट्स एझ धे आर,
गो एकोर्डिंग टु योर इनर कन्विक्शन।
जो बाहर दिखाई पड़ता है– फेक्ट्स... उसे मत गिनो। वो सारे पिक्टोरियल टाईगर्स हैं। गो एकोर्डिंग टु योर इनर कन्विक्शन।

❋ इनर कन्विक्शन क्या ? हमें प्रभु मानवस्वरूप में मिले हैं, वे मेरे हैं और वे मेरा अहित कभी होने नहीं देंगे। यह अपनी कन्विक्शन है। यह स्वामिनारायण की फिलोसोफी है।

❋ हमें अनुभव भी खूब होते हैं, दूसरों को भी अनुभव सुनाते हैं। पर, जब अपना मन बीच में आ जाता है या हमारी बुद्धि में फिट नहीं बैठता, तो सारी चीज़ें भूल कर हम अपने ढंग से वर्तने लगते हैं।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 20.11.2003, गुरुवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 4.12.2003, गुरुवार – एकादशी, व्रत
(3) दि. 16.12.2003, मंगलवार – धनुर्मास प्रारंभ
(4) दि. 20.12.2003, शनिवार – एकादशी, व्रत
(5) दि. 3.1.2004, शनिवार – एकादशी, व्रत
(6) दि. 7.1.2004, बुधवार – पोषी पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का दीक्षा दिन
(7) दि. 14.1.2004, बुधवार – मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India)
Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi